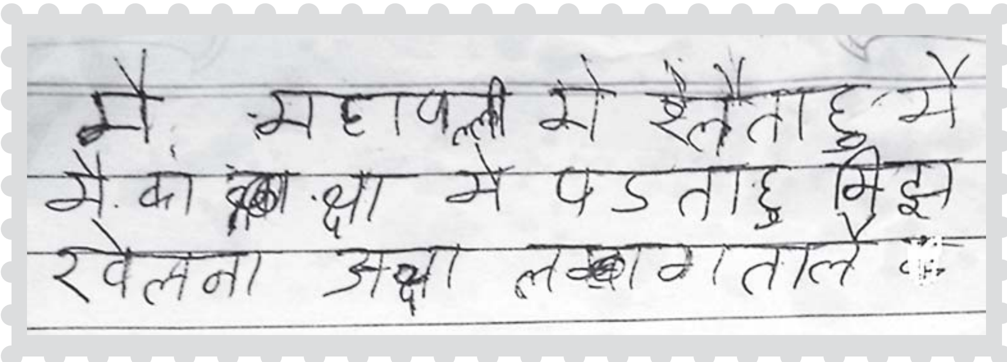
मैं महापल्ली में रहता हूँ...

मीनू पालीवाल



उपर्युक्त लेखन में कक्षा 1 के बच्चे ने अपना परिचय लिखने का प्रयास किया है। बच्चे ने यह अक्तूबर माह में लिखा है। जुलाई से स्कूल खुलते हैं। लगभग 3 से 4 महीने में बच्चा इतना लिखना सीख पाया है।

बड़ों की नज़र से इस लेख में ग़लतियाँ देखने की कोशिश करेंगे तो बहुत-सी ग़लतियाँ नज़र आने लगेंगी क्योंकि कॉपी चेक करने या आकलन करने का मतलब अकसर ग़लतियाँ पहचानना और सुधरवाना ही समझा जाता है। परन्तु थोड़ी उदार और सृजनात्मक नज़र से इसका आकलन करें तो कुछ और ही दिखाई देता है।

आइए, हम उपर्युक्त लेखन का आकलन करने की कोशिश करते हैं।

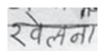
बच्चा क्या-क्या जानता है, इस लेख को देखकर हम इस बारे में निम्न बातें कह सकते हैं :

1. बच्चा 'म', 'ह', 'प', 'ल', 'क', 'क्ष', 'ड', 'झ', 'ख', 'न' अक्षरों को लिखना जानता है।

2. कुछ मात्राएँ, जैसे– 'आ' की मात्रा, 'ए', 'ऐ', 'इ', 'उ' की मात्रा, जानता है।

3. शब्दों के बीच में थोड़ी जगह छोड़ना जानता है।

4. शब्दों के ऊपर एक लाइन खींचना होती है, यह भी जानता है।

5. बच्चे का  में 'ख' लिखने का तरीक़ा यह बताता है कि शिक्षक का लिखा हुआ उसके लिए कितना महत्त्वपूर्ण होता है।

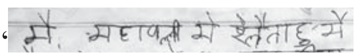
6. लेखन दाएँ से बाएँ और ऊपर से नीचे किया जाता है, इसे भी जानता है।

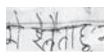
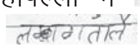
बच्चा सीखने की प्रक्रिया में कहाँ पहुँच चुका है, यह आकलन का एक उद्देश्य होता है। आइए, इसे अनुभव करते हैं।

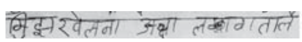
1. बच्चे ने महापल्ली (जो आम मान्यता के अनुसार एक कठिन शब्द है क्योंकि यह 4 अक्षरों से मिलकर बना है और इसमें आधा अक्षर भी है) सही लिखा।

2. बच्चे ने कक्षा शब्द में 'क्ष' अक्षर इस्तेमाल किया है। यह अक्षर कम ही शब्दों में देखने को मिलता है, इसको एक कठिन अक्षर की तरह भी समझा जाता है।

3. 'कक्षा' और 'अच्छा' शब्द बोलकर देखने में ध्वनि में कुछ समानता महसूस होती है। कक्षा 1 का बच्चा यह महसूस कर रहा है और इसलिए शायद उसने अच्छा को अक्षा लिखा है, जो सराहनीय है। इससे यह पता चलता है कि बच्चा अपने सीखे हुए को कहीं और लागू करने की क्षमता विकसित कर रहा है।

4. "" इस वाक्य में बच्चा 'ए' और 'ऐ' की मात्रा का सही उपयोग कर पाया है।

5. "मैं महापल्ली में  " और "खेलना अक्षा  "। इनमें बच्चे ने 'ह' अक्षर की बजाय 'ल' का इस्तेमाल किया है। इससे ऐसा लग सकता है कि बच्चा 'ह' अक्षर नहीं जानता, परन्तु उसने अपने लेखन में 'ह' (हु) और 'ल' का (महापल्ली) सही इस्तेमाल किया है। इसका मतलब यह है कि जब बच्चे से अपना लिखा पढ़कर ठीक करने को कहा जाएगा, इस बात की बहुत सम्भावना है कि बच्चा अपनी ग़लती ख़ुद ही सुधार लेगा।

6. "", इस वाक्य में बच्चे ने 'मुझे' की बजाय 'मिझ' लिखा है। इसका मतलब यह नहीं है कि बच्चा 'ए' और 'उ' की मात्रा का उपयोग नहीं जानता, उसने अपने लेखन में 'इ' और 'उ' की मात्रा का उपयोग किया है।

7. 'ड' और 'ढ़' की ध्वनि में अन्तर कम है, शायद कुछ लोग इस बात से सहमत हों।

सुधार कहाँ, क्यों और कैसे करवाएँ ?

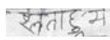
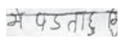
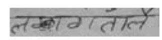
1. **पहला तरीक़ा** : बच्चे को स्वयं अपना लिखा पढ़ने और उसमें सुधार करने को कहा जाना चाहिए।

2. फिर आकलन करने वाले को यह निश्चय करना होता है कि असल में बच्चे ने ग़लती की भी है या नहीं, जैसे– बच्चे ने 'मुझे' की बजाय 'मिझ' लिखा है यह ग़लती है ही नहीं क्योंकि उसने अपने लेखन में 'इ' और 'उ' की मात्रा का कई जगह सही उपयोग भी किया है।

3. दूसरा, हमें यह बात समझनी चाहिए कि हम सारे ही शब्दों की त्रुटियों को सुधारने की कोशिश तुरन्त ही न करने लग जाएँ। इससे बच्चा लिखने से कतराने लगेगा।

4. हम एक समय पर ग़लतियों का पैटर्न देखकर कुछ को सुधारने का तरीक़ा ढूँढ़ें।

इस लेखन में केवल एक ही जगह सुधार करवाने की ज़रूरत दिख रही है।

, , 

तीन जगह एक ही क़िस्म की ग़लती है, यहाँ हम एक पैटर्न देख रहे हैं।

रहताहूँ , पढ़ताहूँ , लगताहै– इनमें एक पैटर्न बनता है। वह दो शब्दों को मिला रहा है और वह भी वाक्य के अन्त के दो शब्दों को। इसे सुधारने के वैकल्पिक तरीक़े हमें सोचने होंगे।

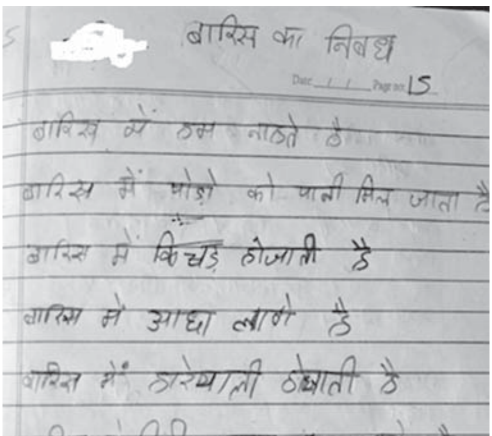
हमारा ग़लत तरीक़ा : बच्चे से सीधे-सीधे यह कहना कि दो शब्दों को एक साथ क्यों लिखा है, इन्हें अलग-अलग करके लिखो। यह तरीक़ा ग़लत है क्योंकि इसमें बच्चे के लिए सोचने की जगह ही नहीं है, सिर्फ़ हुक्म की तामील करना है। वैसे शिक्षक को भी कुछ सोचने की ज़रूरत नहीं है। फिर प्रश्न आता है कि क्या हम तीनों जगह अलग-अलग पेन से चिह्नित करते हुए बताएँगे कि यही सुधार कुल तीन जगह करना है? इस तरह तो हमें हर जगह उसे बताना होगा।

दूसरा तरीक़ा : एक वाक्य में कितने शब्द हैं, यह बताने की गतिविधि पूरी कक्षा के साथ करवाई जाए। उसमें ऐसे वाक्य लिए जाएँ जिनका अन्त एक ही अक्षर से होता हो। उदाहरण के लिए– 'मुझे चॉकलेट अच्छी

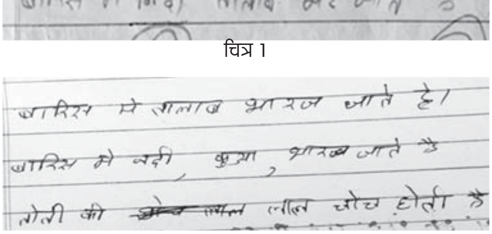
लगती है', 'मैंने तुम्हारी कॉपी ली है', 'मैं गाड़ी पर बैठता हूँ', आदि। इन वाक्यों में कितने शब्द हैं, जब बच्चे यह ख़ुद बताएँगे तो इस बात की बहुत सम्भावना है कि वे अपनी ग़लती ख़ुद ही सुधार लेंगे।

क्या सच में दोबारा लिखते समय बच्चे अपनी गलती सुधार लेंगे ?

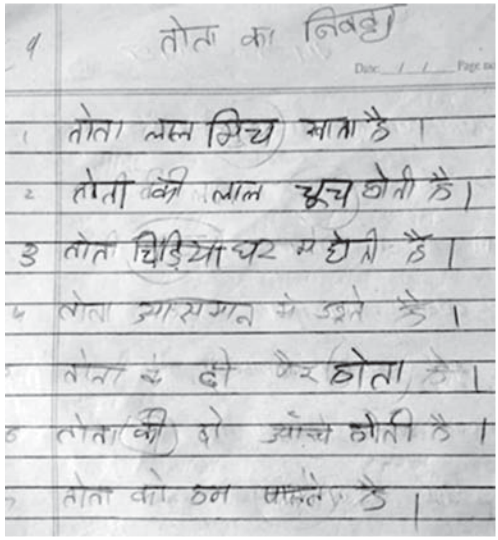
मैंने ऊपर बच्चों की कुछ ग़लतियों को नहीं सुधारने के लिए कुछ तर्क दिए हैं, जैसे– 'मिझ' शब्द, तर्क यह है कि बच्चा 'ए' और 'इ' की मात्रा जानता है। मैंने यह कक्षा में करके भी देखा है और फ़ोटो के माध्यम से आपके साथ साझा भी कर रही हूँ। बच्ची (कक्षा 3) ने 'बारिश' और 'तोता' विषय पर कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं। दो शब्दों, क्रमशः 'नदी' को 'निदी' और 'चोंच' को 'चुच' लिखा है। बच्ची का लेखन देखकर मैं जान गई कि वह इन शब्दों को लिखना जानती है। तोते की चोंच लाल होती है और बारिश में नदी तालाब भर जाते हैं, मैंने बच्ची से यह कॉपी के अन्तिम पन्ने



चित्र 1



चित्र 2



चित्र 3

पर फिर से लिखने के लिए कहा। चित्र 3 में देखें कि बच्ची ने सही मात्रा का उपयोग कर लिया है। हाँ, चोंच में बिन्दी होती है उसपर काम करने की ज़रूरत है।

लेखन बेहतर करने के लिए कुछ सुझाव

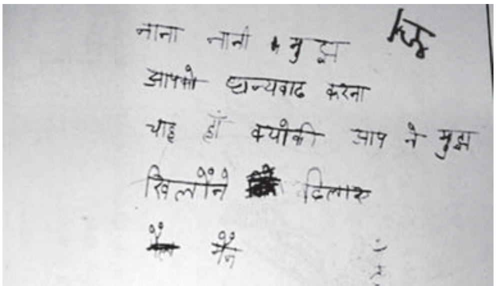
- बच्चों को ज़्यादा-से-ज़्यादा मौलिक लेखन के अवसर देना चाहिए; और
- उन्हें बाल साहित्य पढ़ने के अवसर (विज़ुअल मेमोरी का विकास) उपलब्ध कराने चाहिए।

ज़्यादा–से–ज़्यादा मौलिक लेखन के अवसर

यहाँ हमने कक्षा एक के बच्चे के लेखन का विश्लेषण किया है जो उसने अक्तूबर माह में लिखा है। कक्षा एक का बच्चा लिखकर अपनी बात हम तक पहुँचा पाया है, यह काफ़ी बड़ी उपलब्धि है। ग़लतियाँ सुधरवाने का सबसे अच्छा तरीक़ा एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित की गई किताब *लिखने की शुरुआत : एक संवाद* सुझाती है कि बच्चों को ज़्यादा-से-ज़्यादा लिखने के अवसर दिए जाएँ। शिक्षक बच्चे का लिखा चेक करते वक़्त अपने मन में जो ख़्याल आएँ, उन्हें

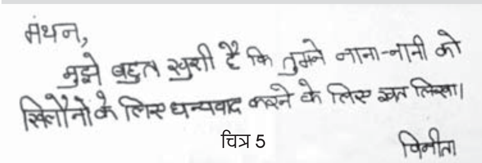
लिखें। जैसे– कोई बच्चा अपने पालतू पशु के बारे में कुछ लिखता है तो शिक्षक यह टिप्पणी दे सकते हैं कि बचपन में उनके पास भी कोई पालतू पशु था। वे किस तरह उसके साथ समय बिताते थे। शिक्षक कोई प्रश्न भी लिख सकते हैं, जैसे– तुमने लिखा कि तुम्हारा पालतू कुत्ता गुम हो गया था फिर वो किस तरह मिला, कहाँ मिला? यह तरीक़ा अपनाने से बच्चे लेखन को एक संवाद के तौर पर देख पाएँगे और उत्तर देने के लिए उन्हें लिखने की स्वाभाविक ज़रूरत महसूस होगी जिससे लेखन के अभ्यास का मौक़ा मिलेगा।

अपनी पसन्द के विषयों पर लिखना

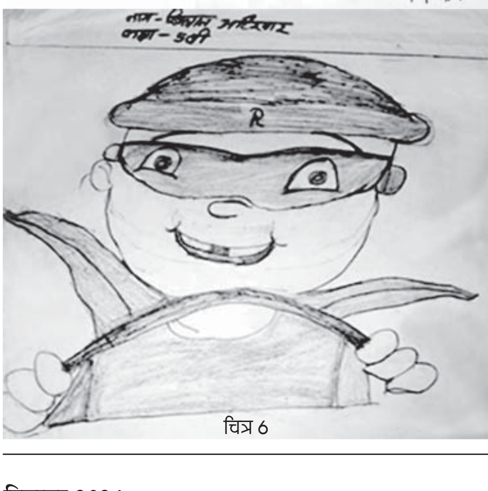


चित्र 4

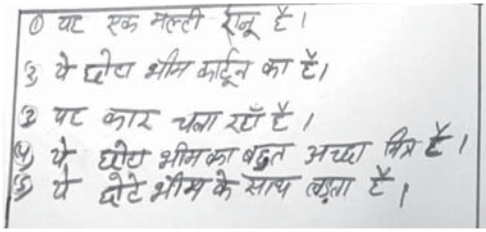
बच्चे के लेखन पर शिक्षक की लिखित प्रक्रिया - लिखने की शुरुआत : एक संवाद पुस्तक से



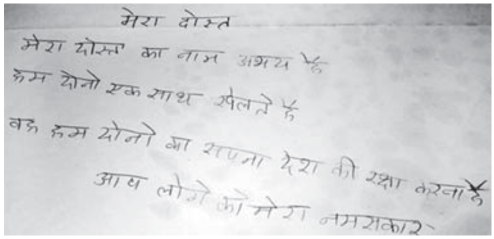
चित्र 5



चित्र 6



चित्र 7



चित्र 8

चित्र 7 में बच्चे ने अपनी पसन्द के कार्टून पर लिखने की कोशिश की है। चित्र 8 में दूसरे बच्चे ने 'मेरा दोस्त' विषय पर लिखने की कोशिश की है। क्या इस तरह के लेखन के अवसर बच्चे को और भी ज़्यादा लिखने को प्रेरित कर सकते हैं?

बाल साहित्य पढ़ने के अवसर (विज़ुअल मेमोरी का विकास)

बच्चों को ढेरों किताबें पढ़ने के लिए उपलब्ध करवाई जाएँ। कक्षा पहली और दूसरी के लिए एनसीईआरटी ने *बरखा* किताबों की श्रृंखला बनाई है। अकसर यह समझा जाता है कि जब पढ़ना ही नहीं आता तो कक्षा पहली और दूसरी के बच्चों को किताबें क्यों दी जाएँ। *बरखा* की किताबों के पहले पन्ने के अन्दर वाले हिस्से पर लिखा है कि ये किताबें पहली और दूसरी के बच्चों के लिए हैं। इन किताबों को चित्रों और शिक्षक की सहायता से जब बच्चे पढ़ेंगे तो अचेतन स्तर पर बच्चे शब्दों, अक्षरों और मात्राओं की बनावट व इस्तेमाल से परिचित हो रहे होंगे। ज़्यादा पढ़ने से बच्चों की विज़ुअल मेमोरी का विकास होगा। 'विज़ुअल मेमोरी' से मेरा आशय उस घटना से है जब आप किसी शब्द को देखकर ही बता देते हैं कि यह ग़लत लिखा है। कई बार आपको ख़ुद भी पता नहीं होता कि इसमें गड़बड़ कहाँ है, पर जब आप उस शब्द को दो-तीन तरह से लिखकर देखते हैं तो

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौक़े देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की ख़ुशी के लिए पढ़ने और स्थाई पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी–छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए *बरखा* की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थाई पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

आप बता सकते हैं कि उनमें से सही कौन-सा है। कुछ लोग इसे अँग्रेज़ी के सन्दर्भ में ज़्यादा बेहतर तरह से समझ पाएँगे। बच्चे जितना ज़्यादा पढ़ेंगे, बातें करेंगे, लिखेंगे, उतना ही उनका लेखन बेहतर होता जाएगा। ज़रा सोचिए, 'महापल्ली' और 'कक्षा' जैसे शब्द पहली कक्षा के बच्चे ने सही-सही कैसे लिख लिए!

मीनू पालीवाल अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में 2017 से काम कर रही हैं। आप फ़ेलोशिप प्रोग्राम के ज़रिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़ीं। इससे पहले उन्होंने 6 वर्ष आईसीआईसीआई बैंक में काम किया। वे अपने मन में आने वाले सवालों की तलाश में शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ीं। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के साथ काम करना उन्हें अच्छा लगता है।

सम्पर्क : meenu.paliwal@azimpremjifoundation.org